

साधक को सही दिशा प्रदान करने वाला मार्गदर्शक होता है गुरु

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय में पंडित बिरजू महाराज की स्मृति में स्थापित बिरजू महाराज चैयर के अंतर्गत पद्मविभूषण डॉ. सोनल मानसिंह के निर्देशन में विशेष विमर्श एवं कार्यशाला कार्यक्रम का आयोजन किया। दो सत्रों में हुए इस आयोजन में डॉ. सोनल ने ओम कार के उच्चारण से विमर्श की शुरुआत कर अपने जीवन एवं कला-साधना से जुड़े अनेक अनुभव साझा किए।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि जैसे सूर्य की किरणें बिना किसी भेदभाव के सभी को प्रकाश प्रदान करती हैं, उसी प्रकार ज्ञान भी जहां से प्राप्त हो, उसे ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों

को ज्ञान के प्रति खुला दृष्टिकोण रखने और स्वयं को निरंतर सीखने के लिए तैयार रखने का संदेश दिया। गुरु की महिमा पर विस्तार से चर्चा करते हुए सोच समझ मनमीत पियरवा; सद्गुरु नाम करे सुमिरनवा की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि गुरु केवल ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं बल्कि साधक को सही दिशा प्रदान करने वाला मार्गदर्शक है। उन्होंने विद्यार्थियों को गुरु के प्रति श्रद्धा, समर्पण और अनुशासन का भाव रखने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय के संदर्भ में नाट्य को विद्या और कला के व्यापक स्वरूप से जोड़ते हुए कहा कि कला केवल प्रदर्शन का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को समझने और समाज को दिशा देने का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि अध्यात्म वही है, जिसे



विद्यार्थियों को संबोधित करती डॉ. सोनल मानसिंह साथ में कुलपति प्रो. मांडवी सिंह।

पूर्ण समर्पण और पूर्णता के साथ जिया जाए।

डॉ. सोनल मानसिंह ने विद्यार्थियों को निरंतर अभ्यास एवं सीखने की प्रक्रिया से जुड़े रहने का संदेश देते हुए कहा कि कला उम्र के साथ सीखने की भी कला है। उन्होंने रस्यते अनेन

इति रसः, रस्यते अस्मिन् इति रसः की व्याख्या करते हुए विद्यार्थियों को जीवन में स्वयं को सुपात्र बनाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि केवल प्रतिभा पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसके लिए निरंतर अभ्यास, साधना, अनुशासन और संवेदनशीलता आवश्यक है। दूसरे

सत्र में भरतनाट्यम एवं कथक की प्रस्तुतियां आयोजित की गईं। डॉ. सोनल मानसिंह ने प्रस्तुतियों का अवलोकन करते हुए विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों के विभिन्न पक्षों, गुणों तथा सुधार की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने कहा कि भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं का सम्मान और उनका संरक्षण हमारे अपने हाथ में है। कलाकार को अपनी परंपरा को समझते हुए उसे साधना और संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ाना चाहिए। पहले सत्र की शुरुआत विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. मांडवी सिंह ने की। इस सत्र में विद्यार्थियों के साथ विशेष विमर्श तथा द्वितीय सत्र में भरतनाट्यम एवं कथक की प्रस्तुतियों पर आवश्यक मार्गदर्शन का कार्यक्रम हुआ।